शांता की कहानी

रामपुर गांव की आशा कार्यकर्ता सुमित्रा इस बात से चिंतित थी कि गांव के कुछ परिवार अपने बच्चों को टीकाकरण के लिए नहीं ले कर जाते हैं। इसीलिए उसने निश्चय किया कि वह उनके घरों में जाएगी और उन्हें टीकाकरण के महत्व और उनके बच्चों के लिए टीकाकरण की आवश्यकता के बारे में बताएगी।

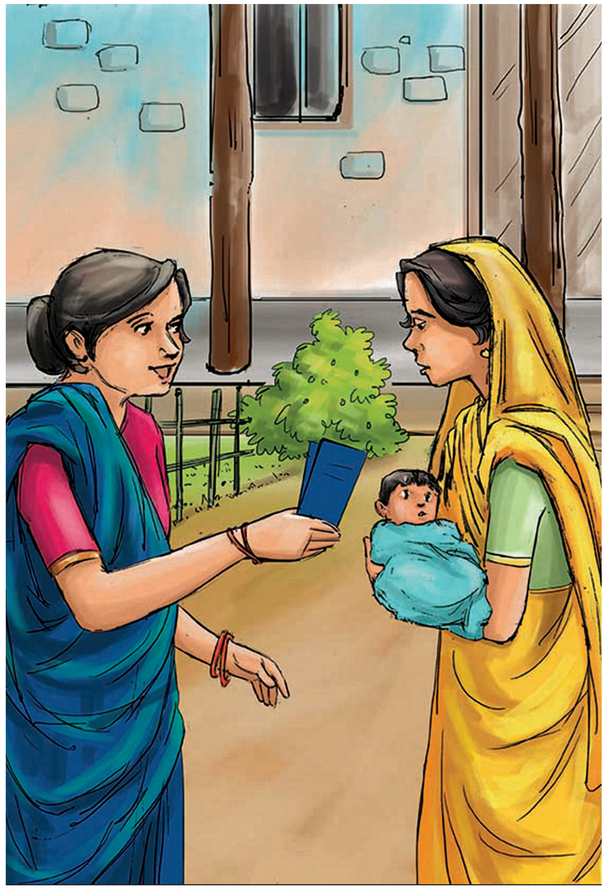

इसी क्रम में वह शांता के घर गई, जहां उसके 6 माह के बच्चे का कभी टीकाकरण नहीं हुआ था। जब सुमित्रा ने उसे उसके बेटे के टीकाकरण की आवश्यकता के बारे में बताया, तो शांता ने कहा कि उसका परिवार टीकाकरण में विश्वास नहीं रखता है और उसकी सास व उसका पति रामलाल उसे कभी बच्चे को टीकाकरण के लिए नहीं ले जाने देंगे। सुमित्रा ने बेहद मैत्रीपूर्ण और स्नेहिल अंदाज में शांता को समझाया कि उसके बेटे के लिए टीकाकरण कितना जरूरी है और उसे अगले बुधवार ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस (वी.एच.एन.डी.) पर बच्चे के साथ आने के लिए कहा। शांता ने अपने परिवार से इस बारे में बात करने का वचन दिया।

शांता की कहानी

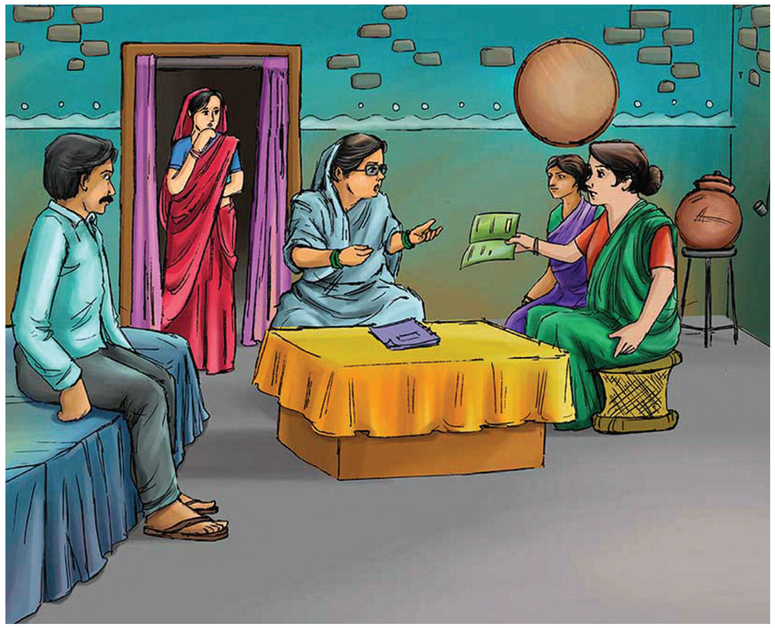

ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस (वी.एच.एन.डी.) पर सुमित्रा ने देखा कि शांता अपने बच्चे को लेकर टीकाकरण के लिए नहीं पहुंची, तो वह सत्र खत्म होने पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को शांता के घर ले गई, जहां संयोग से उसे रामलाल और उसकी मां दोनों मिल गए। सुमित्रा ने उन दोनों को टीकाकरण के महत्व के बारे में बताया। काफी अनुरोध करने के बाद वे दोनों बच्चे के टीकाकरण के लिए राजी हो गए।

उस समय ए.एन.एम. गांव में ही उपस्थित थी, इसलिए वे बच्चे को पोलियो, डी.पी.टी. की पहली खुराक के साथ बी.सी.जी. का टीका भी दिलवाने में सफल हो पाए। सुमित्रा बहुत खुश थी। उसने शांता और उसके परिवार वालों से कहा कि वे बच्चे को टीके की दूसरी खुराक दिलाने के लिए अगले महीने आगामी ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस (वी.एच.एन.डी.) पर जरूर लेकर आएं।

शांता की कहानी

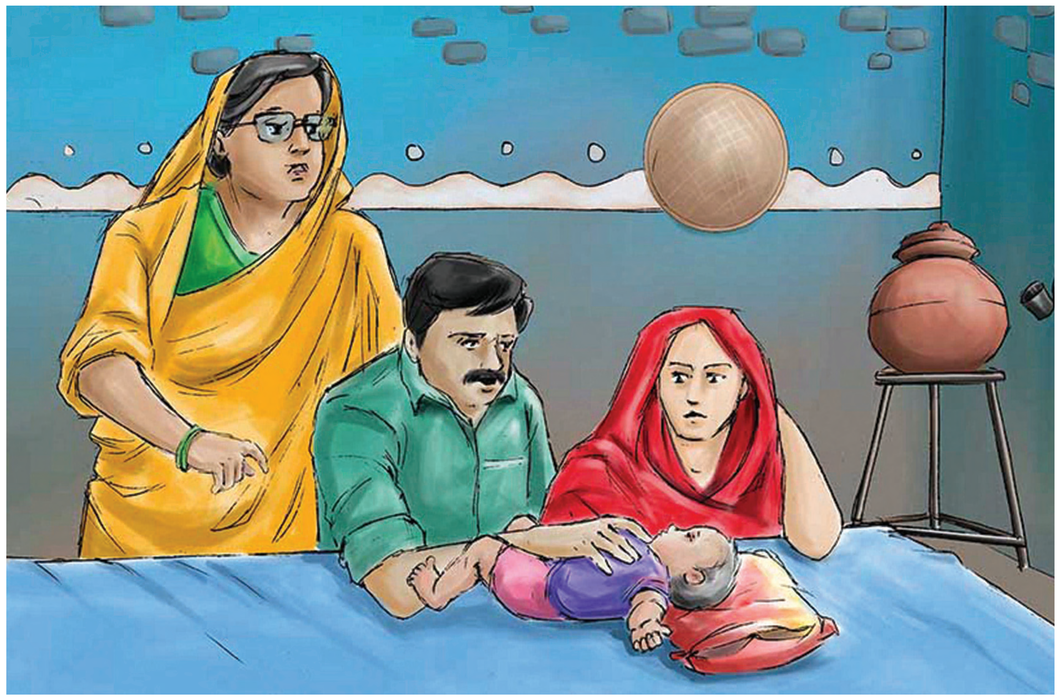

एक सप्ताह के बाद सुमित्रा शांता के घर गई, ताकि देख सके कि बच्चा कैसा है और साथ उन्हें टीके की दूसरी खुराक के लिए बच्चे को लाने की याद दिला दे। शांता की सास ने शिकायत की कि टीकाकरण के बाद बच्चा परेशान हो गया था और उसे सारी रात बुखार रहा था। सुमित्रा ने समझाया कि कई बच्चों में ये सामान्य लक्षण है जो टीकाकरण के बाद उभरते हैं और उसके लिए चिंता करने की कोई बात नहीं है। आगामी ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस (वी.एच.एन.डी.) पर शांता स्वास्थ्य केंद्र पर नहीं आई।

सुमित्रा ने आंगनवाड़ी सहायिका को उसके घर पर भेजा, लेकिन उसने बच्चे को लाने से यह कह कर मना कर दिया कि उसका परिवार दोबारा टीकाकरण के खिलाफ है, क्यों कि पहली बार में बच्चे को बुखार हो गया था और उन्होंने यह भी सुना है कि इससे बच्चा अपाहिज भी हो सकता है। इस तरह बच्चे ने टीके की दूसरी खुराक नहीं ली। अब सुमित्रा ने निर्णय लिया कि बच्चे को टीके लगवाने का एकमात्र उपाय है कि इसके लिए रामलाल को समझाया जाए। उसने सरपंच और रामलाल के दो पड़ोसी जो रामलाल के मित्र भी थे, से इस बारे में बात की।

शांता की कहानी

उन सबने एक साथ मिल कर उस परिवार से लंबा विचार–विमर्श किया और उन्हें बताया कि गांव के सभी बच्चों का टीकाकरण हो चुका है और इससे बीमारियों में काफी कमी आई है। उन्होंने शांता के परिवार को बताया कि टीकाकरण कराना हर बच्चे का अधिकार है और परिवारों को उनकी सेहत से खिलवाड़ के अपराधबोध से नहीं घिरना चाहिए।

रामलाल और उसकी मां दोनों समझ गए और शांता के साथ स्वास्थ्य केंद्र तक गए, जहां बच्चे को टीकों की दूसरी खुराक दी गई। तब से माता–पिता बहुत सतर्क हो गए और उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके बच्चे को सभी टीके लग जाएं, जिनमें खसरे का टीका और विटामिन ए की खुराक भी शामिल हैं। शांता अब सक्रिय रूप से बच्चों के टीकाकरण की वकालत करती है।